ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-5* August- 2021
Anthology : The Research

छत्तीसगढ़ के समाज सुधार में दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त का योगदान

Contribution of Dau Ghanshyam Singh Gupta in the Social Reform of Chhattisgarh

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 24/08/2021, Date of Publication:25/08/2021

विनोद कुमार जांगड़े
शोध छात्र,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

आभा रूपेन्द्र पाल
विभागाध्यक्ष,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त को छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता, समाज सुधारक हिन्दी अनुवादक सैद्धांतिक आर्य समाजी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में प्रसिद्धी मिली, सन् 1923 में मध्य प्रांत एवं सीपी एण्ड बरार के प्रांतीय विधान सभा में निर्विरोध सदस्य चुने गये थे उन्होंने संविधान सभा में संविधान के हिन्दी ड्राफ्ट कमेटी के अध्यक्ष के रूप में हिन्दी अनुवादक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। गांधी जी के विचारों से प्रभावित दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त का समाज सुधार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा। गांधी जी के अछूतोद्धार कार्यक्रम में शामिल होकर सवर्ण समाज के अनेक लोगों को अस्पृश्यता निवारण के लिए प्रेरित किया गुप्त जी ने छत्तीसगढ़ में शैक्षिक संस्थानों के स्थापना में अतुलनीय योगदान दिया। गांधी जी ने दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त द्वारा संचालित पाठशाला का निरीक्षण करते हुए उनके कार्यों की प्रशंसा की और उन्हें ससम्मान प्रोत्साहित किया। पं. सुन्दर लाल शर्मा के साथ सतनामी आश्रम की स्थापना में दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने अग्रिम भूमिका अदा की। छत्तीसगढ़ में मद्य निषेध आंदोलन दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त के संयोजन में सफलता पूर्वक संचालित हुआ। शिक्षा के प्रचार प्रसार एवं छत्तीसगढ़ में शैक्षणिक विकास में दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त का उल्लेखनीय योगदान रहा है। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतो के अनुरूप शिक्षा के व्यापक प्रचार प्रसार व विस्तार के लिए शैक्षणिक संस्थान के स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्त जी ने हिन्दू मुस्लिम एकता व सामाजिक सदभाव के लिए आजीवन प्रयास किया।

Dau Ghanshyam Singh Gupta got fame as a senior Congress leader of Chhattisgarh, social reformer, Hindi translator, theoretical Arya Samaji and freedom fighter, was elected unopposed member in the Provincial Legislative Assembly of Central Provinces and CP & Berar in 1923. He made important contributions as a Hindi translator as the chairman of the Hindi Draft Committee of the Constitution. Dau Ghanshyam Singh Gupta, influenced by Gandhi's ideas, made a remarkable contribution in the field of social reform. Joining Gandhi's untouchability program and inspired many people of the upper caste society to remove untouchability, Gupta made an incomparable contribution in the establishment of educational institutions in Chhattisgarh. While inspecting the school run by Dau Ghanshyam Singh Gupta, Gandhiji praised his work and encouraged him respectfully. Dau Ghanshyam Singh Gupta played an advance role in the establishment of Satnami Ashram along with Pt. Sunder Lal Sharma. The middle prohibition movement in Chhattisgarh was successfully conducted under the co-operation of Dau Ghanshyam Singh Gupta. Dau Ghanshyam Singh Gupta has made a remarkable contribution in the promotion of education and educational development in Chhattisgarh. According to the principles of Arya Samaj, he made a significant contribution in the establishment of educational institution for wide publicity and expansion of education. Gupta ji made lifelong efforts for Hindu-Muslim unity and social harmony.

मुख्य शब्दः आर्य समाज, कौमी एकता, स्वधीनता, प्रांतीय विधानसभा, साहित्यिक कृतियाँ, अश्पृश्यता निवारण, सामाजिक कुरीतियाँ, मद्य निषेध, शैक्षणिक संस्थान।
Arya Samaj, national unity, independence, provincial assembly, literary works, prevention of untouchability, social evils, prohibition of alcohol, educational institutions.

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ी में भाषण देने के लिए प्रसिद्ध प्रखर व ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त का स्वतंत्रता आंदोलन व समाज सुधार कार्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त विलक्षण प्रतिभा, मौलिक विचार के धनी होने के साथ-साथ कुशल व निपुण वक्ता भी थे। अपने प्रखर व्यक्तिव व वाकपटुता के कारण उन्हें विशेष पहचान मिली थी।

गुप्त जी का जन्म 22 दिसम्बर, 1885 ई. को दुर्ग नगर के सम्पन्न परिवार में हुआ था। इसी वर्ष राष्ट्रीय कांग्रेस अपने अस्तित्व में आया था। गुप्त जी के पूर्वज भोसले शासन में सूबेदार पद पर रह चुके थे।

गुप्त जी की आरंभिक शिक्षा दुर्ग में तथा माध्यमिक स्तर की शिक्षा रायपुर में हुई थी। स्नातक की पढ़ाई के लिए वे जबलपुर चले गये और वहां से बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। विद्यार्थी जीवन के दौरान ही जबलपुर में गुप्त जी ने अपने कुशल नेतृत्व का परिचय दे दिया था। सन् 1907 में जबलपुर कालेज के प्रिंसिपल के दुर्व्यवहार से दुखी होकर वहां के छात्रों ने गुप्त जी के कुशल नेतृत्व में ही हड़ताल कर दिया जिसके फलस्वरूप कालेज के प्रिंसिपल को अपने दुर्व्यवहार के लिए छात्रों से माफी मांगनी पड़ी थी। उक्त घटना इस बात की परिचायक थी कि वे अन्याय सहने वालों में से नहीं थे। अनेक बार उन्होंने विद्यार्थी जीवन में ही अन्याय व शोषण के विरूद्ध संघर्ष करना शुरू कर दिया था ।

बी.एस.सी. स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने पर स्वर्ण पदक से पुरस्कृत गुप्त जी ने अपने खेल विधा का परिचय देते हुए कुशल खिलाड़ी के रूप में भी पहचान बनाई थी, वे कॉलेज के हॉकी टीम के कप्तान व कुशाग्र बुद्धि तथा श्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में अत्यंत लोकप्रिय हुए । शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने विज्ञान, विधि, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में विद्वता हासिल की । गुप्त जी ने हिन्दी को विशेष महत्व दिया इसके साथ उनका लगाव आर्य समाज व उनके सैद्धांतिक विचार के प्रति भी था। उनके दार्शनिक विचार ने स्वतः ही लोगों को प्रभावित किया और इस कारण 1905 में जब प्रदेश स्तर पर राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने सी.पी.एण्ड बरार प्रोविन्सेज एसोसिएशन की स्थापना की तब गुप्त जी ने दुर्ग के प्रतिनिधि के रूप में पहचान स्थापित किया ।

सन् 1916 में होमरूल लीग की स्थापना के समय दुर्ग में उसकी शाखा स्थापित करने में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान था।[2]

गुप्त जी ने वकालत की परीक्षा इलाहाबाद से उत्तीर्ण किया । गुप्त जी ने 1910 से ही राजनीतिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारंभ कर दिया, लेकिन सन् 1920 में सी.पी.एण्ड बरार आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष के रूप में विशेष पहचान मिली वे अध्यक्ष पद पर सन् 1965 तक सक्रिय रूप से कार्यरत रहे । उन्होंने सन् 1920 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और इस आंदोलन के दौरान उन्होंने वकालत छोड़ दिया और सक्रिय रूप से राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते हुए सन् 1923 में प्रांतीय विधानसभा के निर्विरोध सदस्य निर्वाचित हुए।[3]

राष्ट्र के अनेक निष्ठावान सपूतों ने असहयोग आंदोलन के दौरान अपने पद, पदवी व सरकारी नौकरी का परित्याग कर दिया था। उनमें दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त भी थे, जिन्होंने सरकारी नौकरी का लोभ न करते हुए सरकारी नौकरी की पदवी का त्याग कर दिया था।

सन् 1926 में पुनः विधानसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित होने के साथ गुप्त जी ने प्रांतीय विधानसभा में विपक्ष के नेता के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन किया । इसके बाद सन् 1929 में उन्होंने विधानसभा के सदस्यता त्याग दी। इसके पश्चात् केन्द्रीय धारा सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । इस दौरान उन्होंने हिन्दू विवाह मैरिज एक्ट के तहत् आर्य मैरिज बिल प्रस्तुत किया । हिन्दू विवाह संस्कार के जटिल प्रक्रिया व अधिक व्यय को कुप्रथा से जोड़ते हुए आर्य समाज के वैवाहिक संस्कार आसान और कम व्यय वाले संस्कार के रूप में प्रस्तुत किया। सन् 1936 में केन्द्रीय विधान सभा के चुनाव का बहिष्कार कांग्रेस के द्वारा नहीं किया गया और केन्द्रीय असेम्बली में निर्वाचित सदस्य के रूप में घनश्याम सिंह गुप्त ने आर्य विवाह बिल को प्रस्तुत कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने हिन्दू समाज के उत्थान के लिए वैधानिक कार्यों में भी अपनी भूमिका अदा की।

दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त अपने साहित्यिक रूचि के चलते साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए साहित्य लेखन के माध्यम से समाज सुधार व राष्ट्रीय आंदोलन में अन्य लोगों को प्रेरित करते रहे।

साहित्य के महत्व को ध्यान में रखते हुए साहित्य और इतिहास को संजोकर अनेक बहुमूल्य कृतियों का मौलिक सृजन किया। उनकी बहुमूल्य कृतियों में मेरे संस्मरण, महाराणा प्रताप, अफजल खां की तलवार, शिवाजी का बखान, गांधी जी के नजर में हिन्दी, हिन्दी में बोल, गांधी गाथा आदि प्रमुख है।4

मेरे संस्मरण गुप्त जी द्वारा लिखित ऐसी बहुमूल्य कृति है, जिसके द्वारा हमें उनकी पारिवारिक व व्यक्तिगत जानकारी के अलावा आर्य समाज संबंधी उनकी गतिविधियों तथा राजनीतिक घटनाक्रम के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी देती है। उनसे संबंधित पाण्डुलिपि को संग्रह कर पुस्तक का रूप देते हुए दुर्ग से प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक 96 पृष्ठों में उल्लेखित है इस पुस्तक में तीन खण्ड हैं जिसमें उनके संबंध में जानकारी दी गई है।

दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त द्वारा लिखित गांधी जी के नजर में हिन्दी में गांधी जी के साथ आत्मिक संबंध के बारे में लिखा गया है। साथ ही हिन्दी की आवश्यकता और महत्व के बारे में महत्वपूर्ण लेख है। उन्होंने लिखा है गांधी जी से विशेष सम्पर्क का मूल कारण आर्य समाज, हिन्दी प्रेमी व समय के पाबंद को बताया है। वे भी गांधी जी के अनुसार समय प्रबंधन को महत्व देते थे।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के समाज सुधार में दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त के योगदान पर केन्द्रित है, प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ के समाज सुधारकों के समाज सुधार कार्य एवं राष्ट्रीय आंदोलन में उनके महत्वपूर्ण योगदान का अध्ययन करना है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है, प्राथमिक स्त्रोतों के अंतर्गत आर्य समाज विद्या मंदिर व आर्य समाज संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के अध्ययन के साथ द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में पं. सुन्दरलाल शर्मा ग्रंथागार, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर के विभिन्न साहित्यों का अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना

पहली परिकल्पना यह है कि दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त गांधी जी के विचारों से प्रेरित होकर स्वधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए। दूसरी परिकल्पना यह है कि दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त के समाज सुधार आंदोलन में आर्य समाज के विचार एवं सिद्धांत का गहरा प्रभाव पड़ा।

समाज सुधार के क्षेत्र में दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त का योगदान

अस्पृश्यता निवारण

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रित देश हमारे भारत में अनेक जातियों और धर्मों के लोग निवास करते हैं, जो सबसे बड़ी विशेषता है लेकिन यहां उंच नीच, जातीय-भेदभाव व अस्पृश्यता एक बड़ी गंभीर समस्या रही है। जिसके कारण जाति के नाम पर घृणा की भावना व तनाव की स्थिति बनी रही। उत्तर और मध्य भारत में सामाजिक बुराइयों को दूर करने में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।6

छत्तीसगढ़ क्षेत्र में आर्य समाज के सिद्धांतों, विचारों व सुधारवादी गतिविधियों से प्रेरित दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने जाति भेदभाव व सामाजिक बुराइयों को दूर करने एक नया प्रतिमान प्रस्तुत किया। उनके त्याग व आदर्श के कारण छत्तीसगढ़ में सामाजिक क्रांति का उदय हुआ और यह सामाजिक चेतना के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान रहा।

हिन्दू समाज में सदियों से चली आ रही है कुप्रथा अस्पृश्यता एक प्रमुख सामाजिक बुराई रही, जिसे दूर करने के लिए बुद्ध, रामानंद, रामानुज, चैतन्य, कबीर, नानक, तुकाराम जैसे संत आजीवन प्रयासरत रहे।[7]

अस्पृश्यता एवं छुआछुत की भावना सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा रही है, इसलिए समाज सुधारकों ने अस्पृश्यता निवारण को महत्वपूर्ण माना और सभी ने इसकी आवश्यकता पर जोर दिया।

अस्पृश्यता को गांधीजी ने हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा कलंक माना और इसे दूर करने के लिए देशवासियों से आव्हान किया। छुआछुत को दूर करना, हिन्दू धर्म के उद्धार के लिए आवश्यक माना और उसे प्रायश्चित का एक रूप माना। छत्तीसगढ़ में अछूतोद्धार आंदोलन के प्रणेता पं. सुन्दर लाल शर्मा ने सन् 1925 में अस्पृश्य जातियों को मंदिर प्रवेश कराकर अस्पृश्यता निवारण को आंदोलन का रूप दे दिया था। इस घटना से नाराज होकर वहां के सनातनी ब्राहम्णों ने राम मंदिर दर्शन का परित्याग कर, वहां के पुजारियों व पं. सुन्दरलाल शर्मा को दंडित किया। उन्हें सामाजिक रूप से बहिष्कृत करने का कार्य भी किया लेकिन उन्होंने बिना इससे घबराये अछूतोद्धार आंदोलन को अनवरत जारी रखा[8]

छत्तीसगढ़ में आर्य समाज के प्रमुख दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने अछूतोद्धार आंदोलन में पं. सुन्दरलाल शर्मा के समर्थक व सहयोगी के रूप में अछूतोद्धार आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल व छोटे-छोटे कस्बों में भी भारत के अन्य क्षेत्रों की तरह जाति भेदभाव उंच-नीच और छुआछुत की भावना विद्यमान थी। निम्न जातियों के घर भोजन ग्रहण करना या पानी पीना तो दूर की बात निम्न जातियों के लोगों के लिए हजामत या कपड़े धोने के कार्य भी करने से नाई या धोबी जाति के लोग इंकार कर देते थे।[9] उस इंकार के पीछे बड़ा कारण यह भी रहा है कि, निम्न जातियों के घर काम करने वाले लोगों को दंडित करके उन्हें जाति से बहिष्कृत कर देते थे। उन्हें कोई काम नहीं दिया जाता था, जिससे उनके सामने रोजी-रोटी की समस्या उत्पन्न हो जाती थी। इससे निम्न जाति के लोग उच्च जाति वर्ग के द्वारा किये जाने वाले इस अत्याचार से स्वयं व परिवार को बचाने के लिए ईसाई धर्म की ओर आकर्षित होने लगे थे और वह बड़ा कारण रहा है कि, छत्तीसगढ़ में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ ग्रामीण अंचल के लोग ईसाई धर्म को स्वीकारने लगे।[10]

इस संदर्भ में अर्जुन्दा की घटना के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है कि, वहां महार जाति के लोग बहुत अधिक संख्या में निवास करते थे। जिन्हें अछूत मानकर नाई जाति के लोग उनके बाल काटने से व धोबी जाति के लोग उनके कपड़े धोने से इंकार कर देते थे।

इस बात की जानकारी ईसाई पादरी और मुसलमान मौलवियों के होने पर 27-28 नवम्बर, 1926 को वहां सभा कर महार जाति के लोगों को ईसाई या मुसलमान बनने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनके साथ छुआछूत की भावना दूर हो सके। दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त को इस बात की जानकारी होने पर वह स्वयं मन्नू लाल पुरानिक दुर्ग एवं ठाकुर प्यारेलाल रायपुर को साथ लेकर अर्जुन्दा पहुंचे और महार

भाइयों को मनाने का प्रयास किया। छत्तीसगढ़ी बोली में उनसे चर्चा किया, उन्होंने कहा कि आप सब की शिकायत है कि, आप सब अछूत समझे जाते हैं, आपके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है और आपके काम करने के लिए नाई और धोबी भी तैयार नहीं होते। हम आपको नाई और धोबी तो नहीं दे सकते लेकिन हम स्वयं आपके नाई और धोबी का काम करने को तैयार हैं। इतना कहने के बाद गुप्तजी ने नाई के कार्य के रूप में उनके बाल काटना प्रांरभ कर दिया, उनके कपड़े धोने शुरू कर दिये।11 इस प्रकार सामाजिक जाति-भेदभाव को तोड़ने का पहल करते हुए निम्न जाति के अनेक लोगों को ईसाई व मुसलमान धर्म में शामिल होने से बचा लिया इस प्रकार अछूतों के उत्थान हेतु प्रेरणास्रोत बने।

दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने उक्त कार्य से प्रेरित होकर स्थानीय नाईयों ने जाति भेदभाव को त्यागने का प्रण लिया, इससे प्रेरित होकर हिन्दू समाज के अनेक लोग जिनमें ब्राहम्ण भी शामिल थे, उन्होंने अछूत माने जाने वाली जाति के लोगों को गले लगाया। यह बहुत महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने सामाजिक उत्थान के लिए सम्पूर्ण सवर्ण समाज को प्रेरित किया।[12]

गांधी जी का छत्तीसगढ़ में अछूतोद्धार कार्यक्रम

गांधी जी की दूसरी छत्तीसगढ़ यात्रा सन् 1933 में अछूतोद्धार कार्यक्रम के रूप में हुई इस कार्यक्रम के दौरान गांधी जी ने छत्तीसगढ़ के अनेक स्थानों की यात्रा की, जिसमें गांव सम्मिलित थे, उनकी इस यात्रा से बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा और गांव-गांव में अछूतों के उत्थान के लिए अछूतोद्धार कार्यक्रम को प्रोत्साहित किया जाने लगा ।

22 नवम्बर, 1933 को गांधी जी जब दुर्ग आये तब दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त जी के घर ठहरे तब गांधी जी ने गुप्त जी से पूछा कि दुर्ग में देखने लायक कौन सा स्थान है तब गुप्त जी ने कहा दुर्ग में एक स्थान देखने लायक हैं वह है हमारे द्वारा संचालित पाठशाला उन्होंने बताया कि इस विद्यालय की स्थापना 1926 में की गई है। इस विद्यालय की विशेषता यह है कि, अछूत जाति के बालक व अन्य जाति के बालक एक साथ, एक ही टाटपट्टी में घुल मिल कर बैठते हैं व साथ पढ़ते हैं। पाठशाला के निरीक्षण करने के बाद महात्मा गांधी जी ने संतोष पूर्वक गुप्त जी से कहा यह तेरा शुभकार्य कदाचित सम्पूर्ण भारत में नहीं तो सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में अवश्य प्रथम किया हुआ है।[3]

सतनामी आश्रम की स्थापना

पं. सुन्दरलाल शर्मा अछूतोद्धार कार्यक्रम गांधी जी के छत्तीसगढ़ आगमन के पूर्व ही कर चुके थे, उन्होंने राजिम के राजीव लोचन मंदिर में अछूत समझे जाने वाली सतनामी जाति के लोगों को मंदिर प्रवेश कराकर उन्हें जनेऊ धारण करने व घर में तुलसी का पौधा लगाने के लिए प्रेरित किया इसमें दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने बहुत सहयोग प्रदान किया। फलस्वरूप सन् 1924 में पं. सुन्दरलाल शर्मा के नेतृत्व में दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त व ठाकुर प्यारेलाल के सहयोग से सतनामी आश्रम की स्थापना की गई। गुरू आगमदास जी इस आश्रम के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इस आश्रम के सदस्यों ने अपने उद्देश्य के रूप में सतनामियों में शिक्षा के प्रचार प्रसार को महत्व दिया।[4]

गांधी जी ने छत्तीसगढ़ के अपने दूसरे आगमन 1933 पर पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा स्थापित सतनामी आश्रम का दौरा किया और उनके कार्यों की प्रशंसा की और उन्हें ससम्मान उपहार भी दिये।

मद्य निषेध आंदोलन

सन् **1920** से ही मद्यपान विरोधी आंदोलन प्रारंभ कर दिया गया था। कांग्रेस के स्वयं सेवकों के द्वारा उत्पाद शुल्क वाली वस्तुओं के विक्रय पर पाबंदी लगायी जाने लगी और शासन को विवश होकर रायपुर जिले में आबकारी नीलामी का विचार त्यागना पड़ा।[15]

सन् **1921-22** में असहयोग आंदोलन ने एक प्रबल जन आंदोलन का रूप ले लिया राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत लोगों के मन में नये दृष्टिकोण को सूत्रपात हुआ। मद्यपान को एक सामाजिक बुराई मानकर स्वस्फूर्त लोग आंदोलन में भाग लेने लगे।**16** दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त के संयोजन में सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में मद्य निषेध कार्यक्रम प्रारंभ किया गया**,** जिसके फलस्वरूप धमतरी**,** रायपुर व बिलासपुर में कांग्रेस सत्याग्रह की स्थापना की गई।[18]

मद्य निषेध आंदोलन बढ़ते चला गया और यह सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में व्यापक रूप लेने लगा सन् **1932** में घनश्याम सिंह गुप्त के नेतृत्व में दुर्ग जिले के अनेक स्थानों पर शराब दुकानों के सामने धरना दिया गया।[18]

शिक्षा के प्रचार-प्रसार व शैक्षणिक विकास में घनश्याम सिंह गुप्त का उल्लेखनीय योगदान रहा है। आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुरूप शिक्षा के व्यापक विस्तार के लिए अनेक विद्यालय एवं महाविद्यालय की स्थापना की गई। दुर्ग में स्थापित आर्य कन्या महाविद्यालय सहित तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना का श्रेय घनश्याम सिंह गुप्त जी को जाता है क्योंकि श्री गुप्तजी से प्रेरित होकर तुलाराम परगनिहा भिंभौरी वाले ने अपनी जायदाद आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के नाम वसीयत कर दिया।[19]

उनकी अंतिम इच्छानुसार छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में कन्या गुरूकुल स्थापित की गई और इनकी सम्पत्ति से करीब **46** एकड़ जमीन खरीदी गई। इसी भूमि पर दानदाता के नाम पर तुलाराम आर्य

कन्या उच्चतर विद्यालय संचालित है। नारी शिक्षा व उनके उत्थान के लिए अभूतपूर्व योगदान है।[20]

कौमी एकता व सामाजिक सद्भाव के प्रयास

गुप्त जी ने अनेक अवसरों पर हिन्दू-मुस्लिम एकता व सामाजिक सद्भाव स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1941 में उग्र हिन्दूओं के भीड़ के द्वारा मुस्लिम समाज के नमाज में व्यवधान उत्पन्न करने के उद्देश्य से मस्जिद के नीचे से गाना बजाना करते हुए जुलूस निकालना चाहते थे। गुप्त जी उक्त भीड़ के समक्ष दण्डवत हो गये तब विवश होकर भीड़ को वहां से जाना पड़ा और भविष्य में भी इस प्रकार की घटना दोहराई नहीं गयी।[21]

इसी प्रकार सन् 1947 में जब मुस्लिम परिवार अपनी कम संख्या को लेकर चिंतित होकर पाकिस्तान जाने की तैयारी करने लगे तब गुप्तजी ने सामने आकर उन्हें सुरक्षा का आश्वासन दिया, उनकी सुरक्षा व सामाजिक सौहार्द के लिए शांति सेना का गठन किया जो सुरक्षा प्रहरी के रूप में कार्य करते थे। गुप्त जी के इन कार्यों से आशान्वित होकर मुसलमानों ने पाकिस्तान जाने का विचार छोड़ दिया।[22]

गुप्त जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के नाम समर्पित कर दिया, उन्होंने अपने कार्यों के द्वारा छत्तीसगढ़ में आर्य समाज को नई उंचाई तक पहुंचाने में अभूतपूर्व योगदान दिया। साथ ही छत्तीसगढ़ में सामाजिक सद्भाव स्थापित कर, राष्ट्र के नवनिर्माण में नए प्रतिमान स्थापित किए।

अद्वितीय विद्वान बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्वतंत्रता सेनानी व समाज सुधारक दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त का 90 वर्ष की आयु में 14 जून, 1976 को देहांत हो गया।[23]

निष्कर्ष

ब्रितानिया हुकुमत की गुलामी से देश को स्वतंत्र कराने के आंदोलन में छत्तीसगढ़ के अनेक लोगों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, उनमें दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त के योगदान को कम नहीं आंका जा सकता। स्वतंत्रता के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के अध्यक्षता में गठित संविधान सभा में छत्तीसगढ़ के कुछ लोग सदस्य के रूप में शामिल थे उनमें दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने बड़ी जिम्मेदारी का निर्वहन किया था।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में गठित प्रारूप समिति द्वारा बनाये गये संविधान के लिखित हिन्दी अनुवाद के लिए बनाई गई समिति की अध्यक्षता कर, अपने कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए अपने जिम्मेदारी का प्रमुखता से निर्वहण किया। इसके अतिरिक्त भाषायी आधार पर राज्यों के पुर्नगठन 1955 व मध्यप्रदेश बनने के पूर्व सी.पी.एण्ड बरार विधानसभा के अध्यक्षता कर एकमात्र छत्तीसगढ़िहा होने का गौरव प्राप्त किया।

अस्पृश्यता निवारण से लेकर विद्यालयों की स्थापना में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके द्वारा दुर्ग में स्थापित कन्याओं के लिए गुरूकुल विद्यालय, आवासीय विद्यालय आज कन्या महाविद्यालय के रूप में स्थापित हो चुका है। नारी उत्थान के लिए उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नारी शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए कन्या विद्यालयों की स्थापना पर बल दिया।

छत्तीसगढ़ के विभूतियों में शामिल बहुमुखी प्रतिभा के धनी दाऊ घनश्याम सिंह गुप्त ने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर समाज सुधार व नारी उत्थान में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन नये राज्य अस्तित्व में आने के बाद भी उन्हें वह सम्मान नहीं मिल पाया, जिसके वे सच्चे हकदार थे।

राज्य बनने से अब तक की सफर में राष्ट्रीय स्तर के नेताओं व सत्ताधारी दल के राष्ट्रीय नेताओं के नाम सड़क, विद्यालय, जलाशय आदि की स्थापना कर, उन्हें सम्मान व पहचान दे दिया गया लेकिन इस कड़ी में स्थानीय छत्तीसगढ़ विभूतियों को सम्मान और पहचान की दरकार आज भी है।

संदर्भ सूची

1. *ठाकुर हरि, छत्तीसगढ़ के महान नायक, प्रदीप प्रकाशन मंदिर, जगदलपुर, पृ. 09।*
2. *आदर्श, ब्रजभूषण सिंह (संपादक) छत्तीसगढ़ की विभूतियां एवं लौकिक प्रसुन्न, 1986, पृ. 15।*
3. *ठाकुर हरि, पूर्वोक्त।*
4. *गुप्त स्व. घनश्याम सिंह, मेरे संस्मरण 1968, पृ. 34।*
5. *गुप्त, घनश्याम सिंह, गांधी जी के नजर में हिन्दी छत्तीसगढ़ में गांधी जी, गांधी शताब्दी समारोह समिति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर 1970, पृ. 17।*
6. *ठाकुर, हरि छत्तीसगढ़ के रत्न कर्मवीर पं. सुन्दरलाल शर्मा, पृ. 36-37।*
7. *देसाई, ए.आर. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, हिन्दी संस्करण 1976, पृ. 209।*
8. *साहू, सतधारी लाल, छत्तीसगढ़ के उत्थान में आर्य समाज की भूमिका, शोध प्रबंध पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग. 1996, पृ. 85।*
9. *गुप्त, स्व. घनश्याम सिंह, मेरे संस्मरण 1968, पृ. 20।*
10. *पूर्वोक्त, पृ. 23।*
11. *शुक्ल, अशोक, छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय चेतना का विकास, पृ. 58।*
12. *पूर्वोक्त।*
13. *गुप्त घनश्याम सिंह, छत्तीसगढ़ में गांधी, सम्पादक ठा. भा. नायक, गांधी शताब्दी समारोह समिति, पं. रविशंकर शुक्ल, 1970, पृ. 18।*

14. *अमृत संदेश (दैनिक समाचार पत्र) रायपुर, कांग्रेस शताब्दी अंक **28** सितम्बर **1985**, पृ. **23**।*
15. *साहू, आर. के. छत्तीसगढ़ में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संचेतना के अग्रदूत श्री घनश्याम सिंह गुप्त एक मूल्यांकन, शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर **1998**, पृ. **168**।*
16. *रायपुर जिला गजेटियर, **1973**, पृ. **440**।*
17. *पूर्वोक्त।*
18. *शर्मा, जे. पी. म.प्र. में स्वतंत्रता आंदोलन **1920** से **1947**, तक प्रकाशन **1989**, पृ. **99**।*
19. *आर्य सेवक, आर्य प्रतिनिधि सभा, म.प्र. व विदर्भ का मासिक पत्र फरवरी **1970**, आर्य शिक्षण संस्था विशेषांक पृ. **11**।*
20. *वही।*
21. *जय छत्तीसगढ़ हिन्दी साप्ताहिक संपादक निरंजन लाल गुप्ता **5** जुलाई **1976**, शार्ट लाइफ स्केच ऑफ घनश्याम सिंह गुप्त पृ. **3**।*